मितानिन पाती

मितानिन की बातें-मितानिन की ख़बरें

अंक-13 | परिकल्पना एवं निर्माण : राज्य स्वास्थ्य संसाधन केन्द्र, छत्तीसगढ़ | सितम्बर-2019

तंबाखू रोको अभियान

मितानिन कार्यक्रम के तहत फैलाई जागरुकता, तंबाकू रोको अभियान चलाया

तंबाकू उत्पाद बेचने हेतु समिति ने किया विरोध, दुकानदारों को दी समझाइश

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

बोरगांव . विकासखंड फरसगांव अंतर्गत मितानिन कार्यक्रम के तहत सभी ग्रामों में स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण समिति के माध्यम से तंबाकू रोको अभियान चलाया जा रहा हैं। जिसके तहत ग्राम पंचायत बोरगांव में 22 मई को विकासखंड फरसगांव के स्वास्थ्य पंचायत समन्वयक श्याम जैन की उपस्थिति में मितानिनों द्वारा तम्बाकू रोको चलाया गया।

अभियान में सर्व प्रथम ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति में तंबाकू रोको संबंधित की चर्चा की गई । तत्पश्चात समिति के सदस्यों, एएनएम, मितानिन, मितानिन प्रशिक्षक गांव की महिलाएं व स्वस्थ पंचायत समन्वयक के साथ कस्तूरबा विद्यालय बोरगांव में बच्चों से तम्बाकू से होने वाले दुष्प्रभावों की चर्चा करते हुए तंबाकू से दूर रहने की सलाह दी गई तथा सभी जनों की मौजूदगी में बैठक पश्चात् तत्काल कार्रवाई के लिये गांव वालों ने मिलकर तम्बाकू रोको अभियान चलाकर दुकान में जाकर तंबाकू बेचने का विरोध किया। दुकानदारों से इस अभियान के संबंध में खुलकर चर्चा की गई और दुकानदार तम्बाकू नही बेचने के लिए सहमत भी हुए। इस दौरान ग्रामीणों ने कहा कि ऐसा अभियान सभी गांवों में होना चाहिए जिससे गांव का सुधार हो। जब गांव में तंबाकू और तंबाकू उत्पाद नही बिकेंगे तो निश्चित तौर पर लोगों को धीरे धीरे इसकी बुरी लत से छुटकारा मिल सकेगा ।

प्रदर्शन... नशापान रोकने का संदेश देते महिलाओं ने निकाली रैली।

अकलतरा–जांजगीर | पेंड्रा–बिलासपुर | बैगाटोला–खैरागढ़–राजनांदगांव | चिरमिरी

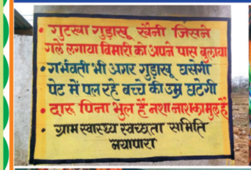

डौंडीलोहारा–बालोद | खड़गवां–कोरिया | भोपालपटनम–बीजापुर

जनजागरूकता : नशामुक्ति के लिए गांव में निकाली रैली

अमलीडीह@ पत्रिका. मालखरौदा जनपद अंतर्गत ग्राम पंचायत अमलीडीह में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं मितानिनों के द्वारा नशा मुक्ति अभियान के तहत जागरूकता रैली निकाली गई। इस दौरान गांव में घूमते हुए महिलाओं ने नारा लगाते हुए नशा नहीं करने का संदेश दिया। साथ ही बीड़ी, तंबाखु, गुटका शराब, गुड़ाखू छोड़ने का नारा लगाते हुए लोगों को नशे से होने वाले दुष्परिणाम के बारे में बताया । महिलाओं ने नारे के माध्यम से ग्रामीणों को नशे से दूर रहने और अपने आसपास के लोगों को भी नशे से दूर रखने के लिए जागरूक करने का आह्वान किया। रैली के माध्यम से बताया कि किस तरह नशा न केवल खुद को बल्कि पूरे परिवार को बर्बाद कर देता है। इस मौके पर अंजू डनसेना प्रेरक छपोरा, मितानिन देवकुमारी चन्द्रा, खीकबाई चौहान, आशा बरेठ, आरती चन्द्रा समेत आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और महिलाएं उपस्थित थीं।

दस्त से बचने व तंबाखू रोको अभियान में मितानिनों ने सुरेगांव में निकाली रैली

भास्कर न्यूज | देवरीबंगला

उल्टी, दस्त, मलेरिया से बचने व तम्बाखु के दुष्प्रभाव रोकने मितानिन ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता व पोषण समिति के सहयोग से ग्रामीणों को जागरूक करने रैली निकाल नाटक मंचन कर रही है। समिति के सहयोग से दीवारों पर नारा लेखन का कार्य किया जा रहा है।

सोमवार को संकुल केंद्र सुरेगांव में मितानिनों ने समिति के सदस्य व किशोरी [illegible] रैली निकालकर ग्राम भ्रमण किया। रैली में भुरकाभाट, शिकारीटोला, भेंड़ी(सु), भंडेरा, सुरेगांव, कैंवट नवागांव की मितानिन लक्ष्मी ठाकुर, पद्मा साहू, योगेश्वरी भुआर्य, शैल देशमुख, ललिता देवांगन व किनेश्वरी निषाद ने भाग लिया।

देवरीबंगला. रैली में शामिल बालिका व मितानिन।

[illegible] की शुद्धता की जांच की।

पारा बैठक में भी दी जानकारी: मितानिन प्रशिक्षक केशव शर्मा व सुशीला साहू ने बताया कि मितानिन अपने पारे में बैठक कर लोगों को जल जनित बीमारियों से सतर्क कर रहे है। मितानिन इस दौरान परिवार [illegible] तक के बच्चों का [illegible] जांच रही है।

ब्लाक समन्वयक अनिता रामटेके ने बताया कि ब्लाक के 130 से अधिक गांवों में रैली निकाली गई और नाटक का मंचन किया गया।

लोरमी–मुंगेली | खरसिंया–रायगढ़ | पाटन–दुर्ग | प्रेमनगर–सूरजपुर

स्वास्थ्य के क्षेत्र में मितानिन की भूमिका

बुखार से पीड़ित गर्भवती का मितानिन ने सही समय पर इलाज करवाया

नगर पंचायत-डभरा, कोलकी पारा, विकासखंड-डभरा, जिला-जांजगीर

गांव की गर्भवती राजकुमारी को बहुत तेज बुखार हो गया था। घर वालों ने पारा की मितानिन गंगा को बुलवाया। मितानिन राजकुमारी को तुरंत 102 गाड़ी बुलवाकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र डभरा लेकर गयी। डभरा में राजकुमारी का इलाज किया गया और राजकुमारी का बुखार ठीक भी नहीं हुआ था और छुट्टी कर दी गयी। घर आने के बाद राजकुमारी का बच्चा भी पेट में नहीं खेल रहा था। मितानिन, राजकुमारी और उसके परिवार वालो को समझाकर फिर से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर गयी। मितानिन ने राजकुमारी का खून जांच करवाया जिसमें राजकुमारी को टाईफाईड निकला। अस्पताल में राजकुमारी को दवा दी गयी। मितानिन ने राजकुमारी को सही समय पर दवा और खानपान के लिए समझाया और समय-समय पर उससे जाकर मिलती रही। सही समय पर पूरी दवा लेने से राजकुमारी स्वस्थ हो गयी।

➠ गंगा सिदार-मितानिन

झोलाछाप डॉक्टर से बचे और बीमारी में अपने पारा की मितानिन से मदद ले

ग्राम-पेंड्री, विकासखंड-डौंडी, जिला-बालोद

गांव की 28 वर्षीय आंगनबाड़ी कार्यकर्ता की तबीयत ठीक नहीं चल रही थी उसे रोज बुखार आ रहा था। आंगनबाडी कार्यकर्ता ने गांव में घूमने वाले एक झोलाछाप डॉक्टर को दिखाया और दवा ले ली। दवा खाने के एक सप्ताह बाद भी उसे कुछ आराम नहीं मिला। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता फिर अपने पारा की मितानिन निर्मला से मिली और उसे बताया की झोलाछाप डॉक्टर की दवा खाते एक सप्ताह हो गया है और 1 हजार रूपए भी खर्च हो गए है परन्तु मेरी तबियत ठीक ही नहीं हो रही है। मितानिन ने तुरंत आर.डी. किट से कार्यकर्ता की मलेरिया की जांच की। जांच में पी.वी. मलेरिया निकला। मितानिन ने उसकी उम्र के अनुसार क्लोरोक्विन की गोली तीन दिन खाने के लिए दी। तीन दिन बाद मितानिन पारा भ्रमण के दौरान उससे मिली तो उसने बताया की वह अब बिल्कुल ठीक है उसे बुखार भी नहीं आया।

➠ निर्मला लटिया-मितानिन

मितानिन ने होली का त्यौहार छोड़ गर्भवती को प्रसव के लिए अस्पताल लेकर गयी

ग्राम-कोरासी, पंचायत-करकरा, विकासखंड-छुरा, जिला-गरियाबंद

होली का दिन था गांव की एक गर्भवती रोमा निषाद को प्रसव पीड़ा शुरू हुयी तो मितानिन तुलसी को बुलाया गया। मितानिन ने तुरंत 102 को फोन किया तो गाड़ी बिगड़ गयी है बताया गया। फिर मितानिन ने 108 को बुलाया तो वह भी नहीं आया। रोमा का दर्द बढ़ रहा था। मितानिन ने 104 में शिकायत करने का प्रयास किया तो फोन बंद बताया। मितानिन ने ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति से गाड़ी के लिए पैसे लेकर गाड़ी किराये से की और रोमा को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खड़मा लेकर गयी। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में केवल एक डॉक्टर थे और बाकी स्टाफ छुट्टी पर थे। अस्पताल में पहुंचने तक माता का दर्द कम हो गया था और त्यौहार है कहकर रोमा को वापस घर लेकर आ गए। घर पहुंचने के 1 घंटे के बाद फिर से रोमा को तेज दर्द हुआ तो मितानिन के सहयोग से उसे फिर से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। रात में रोमा का प्रसव हुआ। रोमा के परिवार वालों ने मितानिन को त्यौहार के दिन अपना घर और परिवार का काम छोड़ कर उनका साथ देने के लिए बहुत धन्यवाद दिया गया।

कंगारू विधि से मितानिन ने बचाई बच्चे की जान (ग्राम-सुवारपारा, विकासखंड-बतौली, जिला-सरगुजा)

गांव के पटेलपारा में विद्यावती और शशिन्दर दास के घर एक बच्चे का जन्म हुआ। जन्म से ही बच्चा कमजोर था और मां का दूध भी बच्चे के लिए नहीं हो रहा था। घर वालों को यह बात समझ में नहीं आ रही थी। एक दिन बच्चा बहुत देर तक दूध नहीं मिलने पर रोते-रोते सो गया और जब घर वाले उसे जगाने लगे तो बच्चा नहीं जागा। घर वाले घबरा गए, बच्चे की दादी तुरंत झाड़-फुंक करने वालों को बुलाने गयी और बच्चे की दीदी पारा की मितानिन को बुलाने गयी। बच्चे की दीदी ने मितानिन कांति को बताया की बच्चे को बहुत देर से उठा रहे हैं पर वह उठ नहीं रहा है। मितानिन तुरंत उसके साथ उनके घर गयी। झाड़-फुंक करने वाला भी उस समय तक आ गया था। बच्चे की मां मितानिन से बोली की 102 गाड़ी बुला दो हम लोग अस्पताल जाएंगे। मितानिन ने बोला हां ठीक है मैं एक बार बच्चे को देख लेती हूं। मितानिन ने बच्चे को देखा तो बच्चा सुस्त हो गया था और शरीर भी ठंडा पड़ने लगा था। मितानिन ने कंगारू विधि से बच्चे को मां के सीने से चिपका कर रखवाया और घर वालों से बात करती रही। आधा घंटे के बाद जब बच्चे को मितानिन ने मां से लिया तो बच्चा का शरीर गर्म हो गया था और बच्चा आंख खोलकर देख भी रहा था। मितानिन ने फिर बच्चे की मां को और घर वालों को बच्चे को कपड़े में लपेटकर और कंगारू विधि से गर्म रखने के बारे में बताया और यह भी बताए कि कंगारू विधि से परिवार का कोई भी सदस्य रख सकता है। इसके साथ ही साथ मां को बच्चे को दिन में 8 से 10 बार दूध पिलाने की सलाह दी। मितानिन हर दिन एक बार बच्चे को देखने जाती थी और स्तनपान और गर्म रखने के बारे में पूछती थी। मितानिन की सलाह मानने से बच्चे का वजन और शरीर धीरे-धीरे बढ़ने लगा।

➠ कान्ति-मितानिन

ग्राम स्वास्थ्य समिति

गांव में किसी की मृत्यु पर कपड़ा नहीं, आर्थिक सहयोग देने के लिए समिति ने लोगों को सहमत किया

ग्राम पंचायत-छान्छी, विकासखंड-कसडोल, जिला-बलौदाबाजार

ग्राम छान्छी में ग्राम स्वास्थ्य समिति की बैठक में शासन की सभी योजना पर चर्चा के बाद समिति के सदस्यों ने गांव में किसी की मृत्यु होने पर मृतक को कपड़ा चढ़ाने की जगह उसके परिवार को आर्थिक सहयोग किया जाने पर चर्चा की गयी। समिति के सदस्यों ने कहा की हम सभी तो राजी है परन्तु पूरे गांव वालों से बात करना पड़ेगा। एक सप्ताह बाद गांव में बैठक की गयी जिसमें करीब 100 से 150 ग्रामीणों ने भाग लिया। ग्रामीणों ने कहा की क्या अब कोई मरेगा तो हम एक कपड़ा भी नहीं चढ़ा सकते हैं ? समिति के सदस्यों ने उन्हें समझाया कि किसी की मृत्यु होती है तो हर कोई मृतक को कपड़ा चढ़ाते हैं उसका कोई उपयोग नहीं होता है या तो उसे फेंक देते है या फिर जला देते हैं। कपड़े की जगह अगर हम मृतक के परिवार को आर्थिक सहयोग देंगे तो वह राशि उनके परिवार के लिए बहुत काम आ सकती है। यह बैठक कुछ घंटे तक चली और फिर ग्राम पंचायत ने यह प्रस्ताव पास किया की गांव में अगर किसी की मृत्यु होती है तो वह एक थाली रखी जाएगी जिसमें गांव वाले मृतक के परिवार को अपनी ओर से सहयोग राशि को डालेंगे। गांव में इस विषय पर हांका भी डालते हैं। ग्राम पंचायत छान्छी में अब किसी की भी मृत्यु हो तो लोग कपड़े नहीं चढ़ाते हैं, आर्थिक सहयोग ही करते हैं।

समिति के प्रयास से आंगनबाड़ी में बच्चो को अंडा खिलाया जा रहा है

ग्राम-चिल्हारी, विकासखंड-अंबागढ़ चौकी, जिला-राजनांदगांव

गांव में ग्राम स्वास्थ्य समिति की संकुल बैठक रखी गयी थी। बैठक में मितानिन के साथ-साथ गांव की महिलाएं और स्वयं सहायता समूह की महिलाएं भी आई थी। बैठक में आंगनबाड़ी केंद्र में बच्चों को दिए जाने वाले पोषण आहार पर चर्चा की गयी। जिसमें बताया गया की बच्चों को पोषण आहार दिया जाना चाहिए उतना नहीं मिल पाता है इसलिए सरकार के द्वारा दूध या अंडा दिए जाने का आदेश जारी किया गया है। समिति के सदस्यों द्वारा समूह की महिलाओं को समझाया गया की बच्चों को मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ होने के लिए दूध और अंडा बहुत जरूरी है। बच्चे को खाना बदल-बदल कर देंगे तो बच्चा खाना रूचि के साथ खाएगा। और खाना अच्छे से खायेगा तो उसका विकास भी अच्छा होगा। इस जानकारी के बाद से मुड़पार और दुमर दुआ में दूसरे दिन से बच्चों को अंडा देना शुरू कर दिया गया।

समिति के प्रयास से मजदूर को उनके काम का पैसा मिला

ग्राम-गम्ही, विकासखंड-विश्रामपुरी, जिला-कोंडागांव

गांव में 2018 में रोजगार गारंटी के तहत खेतों की मरम्मत का काम किया गया था। जिसका भुगतान 2019 चालू होने तक नहीं किया गया था। गांव की ग्राम स्वास्थ्य समिति की बैठक में मितानिन रमशीला ने समिति को इस बात की जानकारी दी। समिति के सभी सदस्य बैठक के बाद रोजगार सहायक से मिलने के लिए गए तो उसने कहा की बैंक जाकर पास बुक में इंट्री करा लो पैसा जमा हो गया है। एक सप्ताह के भीतर सभी गांव वाले बैंक जाकर अपनी बैंक की पासबुक में इंट्री करवाए तो पता चला की किसी के भी खाते में पैसे जमा नहीं हुए हैं। इसी बीच गांव में ग्राम सभा की बैठक हुई तो मितानिन इस बैठक में अपने साथ सभी मजदूरों को लेकर गई और सभी ने अपनी मजदूरी के लिए आवाज उठायी। बैठक में सभी मजदूरों ने कह दिया की अगर हमें 15 दिन के अन्दर मजदूरी नहीं मिली तो हम कलेक्टर जनदर्शन में जाकर आवेदन देंगे। मजदूरों की बात सुनकर सरपंच और सचिव ने बोला हम लोग 15 दिन के अंदर मजदूरी का भुगतान कर देंगे। 15 दिन के अंदर सभी मजदूरों की मजदूरी का भुगतान कर दिया गया।

➡ **तामेश्वरी यादव-मितानिन प्रशिक्षक, रमशीला-मितानिन**

समिति के द्वारा कराए जा रहे दीवार लेखन पढ़, लोग हो रहे हैं जागरूक

मितानिन कार्यक्रम के तहत अपने पारा अपने गांव के लोगों को स्वास्थ्य, पोषण और अधिकारों के प्रति जागरूक करने गांव के मुख्य स्थानों पर दीवार लेखन किया जा रहा है। दीवार लेखन में लिखी जा रही जानकारी को पढ़कर लोगों में जागरूकता तो आ ही रही है साथ ही उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयास भी किया जा रहा है। दीवार लेखन से लोगों में आ रही जागरूकता से संबंधित कुछ प्रयास निम्न है -

दीवार लेखन पढ़कर महिला को पीटने वाले को समिति ने भेजा जेल

ग्राम-रेंगोला, विकासखंड-जशपुर, जिला-जशपुर

गांव में स्वस्थ पंचायत समन्वयक और मितानिनों ने ग्राम स्वास्थ्य समिति की बैठक की और उसमें गांव के मुख्य स्थानों पर लोगों के स्वास्थ्य, पोषण, सामाजिक अधिकार पर दीवार लेखन करने के बारे में चर्चा की गई। दूसरे दिन गांव के एक घर की दीवार पर नशा से होने वाले बुरे प्रभावों और महिला हिंसा पर दीवार लेखन किया गया। उस घर का पति जो आदतन शराबी था उसने जब उसे पढ़ा तो वह अपनी पत्नी को मारा और कहने लगा की मैं तेरे साथ शराब पीकर मारपीट करता हूं इसलिए तुमने जान बुझ कर हमारे घर की दीवार पर यह सब लिखवाया है। पत्नी ने दूसरे दिन मितानिन को सब बताया तो मितानिन और मितानिन प्रशिक्षक ने गांव में फिर से बैठक रखी। बैठक के बारे में जब पति को पता चला तो वह कुल्हाड़ी लेकर मितानिन और मितानिन प्रशिक्षक को मारने निकला और कहने लगा की तुम लोग यह सब लिखकर हमको डराते हो। मितानिन ने गांव के सरपंच को बुलवाया और गांव के लोगों ने पति को समझाने का बहुत प्रयास किया परन्तु वह नहीं माना। बैठक में लोगों ने फिर पुलिस में रिपोर्ट के लिए एक आवेदन तैयार किया और थाने में जमा कर दिया। शाम को पुलिस आई और उस आदमी को अपने साथ ले गई। रात भर उसे थाने में बंद रखा गया और दूसरे दिन समझा कर छोड़ दिया गया। उस दिन के बाद से पति ने शराब पीना छोड़ दिया है और अपनी पत्नी के साथ मारपीट भी नहीं करता है। इसके साथ ही साथ उस गांव के अन्य लोग जो शराब पीते थे वो भी अब शराब पीना कम कर दिए हैं।

गुड़ाखू का नशा करने वाले परिवार ने दीवार लेखन के बाद गुड़ाखू करना छोड़ा (ग्राम-केवरी, विकासखंड-लखनपुर, जिला-सरगुजा)

ग्राम केवरी में एक परिवार है जिसमें 18 सदस्य रहते हैं और उनके घर में रहने वाले सभी बड़े सदस्य दिन में कम से कम तीन बार गुड़ाखू घिसते थे। गांव की मितानिन ने उन्हें पहले भी समझाया था परन्तु वे नहीं मानते थे। मितानिन ने उनके घर की दीवार पर गुड़ाखू से होने वाले खतरों से संबंधित दीवार लेखन करवाया जिसे पढ़ने के बाद तो परिवार के चार लोगों ने तुरंत गुड़ाखू घिसना छोड़ दिया। गांव में उसी दौरान ग्राम स्वास्थ्य समिति की बैठक रखी और उस परिवार के घर सभी लोग मिलने गए। परिवार वालो ने स्वयं बोला की आप लोग हम लोगों को शपथ दिलवाएंगे तभी हम गुड़ाखू घिसना छोड़ेंगे। गांव की सरपंच को बुलाया गया और परिवार के बाकी सदस्यों ने सब के सामने शपथ ली कि वे अब से गुड़ाखू का नशा नहीं करेंगे और अगर कभी किए तो उनसे जुर्माना लिया जाएगा। समिति के सदस्य उनके घर की निगरानी करते हैं। एक सप्ताह बाद मितानिन उनके घर गई तो पता चला की अब उस घर में कोई भी गुड़ाखू नहीं घिसता है।

दीवार लेखन पढ़ पति ने पत्नीं के साथ मारपीट करना छोड़ा (ग्राम-जुनाडिही, विकासखंड-सारंगढ़, जिला-रायगढ़)

गांव में समिति के द्वारा महिलाओं के साथ मारपीट और नशे के संबंध में व्यवहार परिवर्तन हेतु दीवार लेखन करवाया गया था। समिति के सदस्यों ने एक घर पहचाना जिसमें एक पति अपनी पत्नी के साथ मारपीट करता था उसके घर की दीवार पर महिला हिंसा संबंधी कानूनी जानकारी पर दीवार लेखन करवाया। दीवार लेखन देखने के बाद उस घर के पुरूष ने अपनी पत्नी से कहा की इसमें जो चित्र बनाया गया है वह तो हम दोनों की कहानी है का चित्र बनाया गया है। पुरूष को दीवार लेखन देखकर बहुत बुरा लगा और उसने उस दिन से अपनी पत्नी के साथ मारपीट करना छोड़ दिया। उस घर की महिला ने यह सारी जानकरी अपने पारा की मितानिन को बताई।

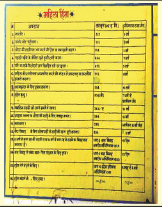

दीवार पर महिला हिंसा संबंधित कानूनी जानकारी पढ़कर, पति ने पत्नी को कभी भी न मारने का विश्वास दिलाया

(ग्राम-अलकाडीही, विकासखंड-राजपुर, जिला-बलरामपुर)

पिछले माह गांव में अन्य विषयों के साथ ही साथ महिला हिंसा के विषय पर गांव में मुख्य स्थानों पर दीवार लेखन करवाया गया था। दीवार लेखन करने वाले ने सड़क के किनारे एक घर में महिला हिंसा के विषय पर कानून के संबंध में जानकारी लिख दी। उस घर में रहने वाली महिला को उसके पति और सास के द्वारा बहुत प्रताड़ित किया जाता था। दीवार लेखन होने के बाद जब पति ने कानूनी जानकारी को पढ़ा तो उसने अपनी पत्नी से कहा की मैं तुझे हमेशा मारता–पीटता हूं और अगर तुमने शिकायत कर दी तो मैं तो सीधा जेल चला जाऊंगा। पति ने पत्नीं को उस दिन से उसके साथ कभी भी मार–पीट नहीं करने का विश्वास दिलाया।

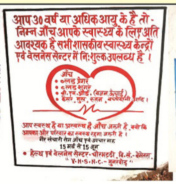

दस्त से बचाव के लिए पुरे स्वास्थ्य अमले ने किया दीवार लेखन

विकासखंड-उसूर, जिला-बीजापुर

ग्राम में समिति के सदस्यों एवं मितानिनों द्वारा गांव में दस्त की रोकथाम के लिए जगह–जगह दीवार लेखन किया जा रहा था। विकासखंड के खंड चिकित्सा अधिकारी ने उन नारों को पढ़ा तो उन्हें बहुत अच्छा लगा। खण्ड चिकित्सा अधिकारी के द्वारा सभी ए,एन.एम. से कहा कि मितानिनों के द्वारा जो जानकारी लिखी जा रही है उससे हम दस्त से आसानी से रोकथाम कर सकते हैं और दस्त के मरोजों को गंभीर होने से बचा सकते हैं इसलिए आप लोग भी मितानिन के साथ गांव में दस्त पर दीवार लेखन करिए।

दीवार लेखन का काम करने वाले पेंटर में दीवार लेखन करते–करते आया बदलाव

ग्राम-शगुना, विकासखंड-पाली, जिला-कोरबा

गांव में समिति के द्वारा शासन की विभिन्न योजना, जन अधिकारों, महिला हिंसा से संबंधित कानूनी जानकारी पर दीवार लेखन का काम पेंटिंग का काम करने वाले एक पति–पत्नि को दिया था। पेंटर पति बहुत पीता था और अपनी पत्नी को मारता भी था। दीवार लेखन का काम करते–करते उसने नशा से होने वाली बीमारियों को जितने बार लिखता था उतने बार उसे पढ़ता भी था। धीरे–धीरे उसने नशा करना छोड़ दिया और अपनी पत्नी के साथ मारपीट करना भी। अब और अच्छे से काम कर रहा है।

मितानिन और समिति पानी जांच कर अपने लोगों को बचा रहे हैं गंभीर बीमारियों से

आज भी हमारे राज्य में रहने वाले बहुत से लोगों के लिए पीने का साफ पानी मिलना एक बड़ी समस्या है। पानी के उपयुक्त साधन नहीं होने के कारण लोग नदी, तालाब, झरना, डोढ़ी आदि से पानी पीने को मजबूर हैं। पिछले कुछ सालों में राज्य में दूषित पानी पीने से होने वाली बीमारियों जैसे पीलिया, दस्त और टाईफाईड की बहुत सी घटनाएं घटी है जिसमें बहुत सी जाने भी गयी है। इस समस्या से निपटने के लिए मितानिन कार्यक्रम के द्वारा मितानिनों और स्वास्थ समिति के सदस्यों को अपने पारा, मोहल्ला में पानी के स्त्रोत से निकलने वाले पानी की जांच के लिए एक H2S किट दिया गया था। इस किट के माध्यम से मितानिन और समिति के सदस्य आसानी से दूषित जल वाले स्त्रोतों की पहचान कर रहे हैं और जल विभाग की सहयता से उस स्त्रोत के जल का उपचार कर रहे हैं। मई 2019 में ग्रामीण मितानिन और समिति के द्वारा राज्य के 144 विकासखंडो के 15667 हैण्डपंपों और सामुदायिक नलों के पानी की जांच H2S किट की सहायता से की गयी जिसमें 1353 स्त्रोतों का पानी खराब निकला। मितानिन और समिति द्वारा इन स्त्रोतों के उपचार हेतु प्रयास किया जा रहा है और पारा के लोगों को पानी उबाल कर पीने की सलाह दी जा रही है।

ग्राम-अचानकपुर, विकासखंड-बोड़ला, जिला-कबीरधाम

गांव की ग्राम स्वास्थ्य समिति की बैठक की गयी जिसमें गांव वालों ने बताया की रोड के पास में जो हैंडपंप है उसमें आस–पास हमेशा गंदगी रहती है, पानी भरा रहता है और उसका पानी भी खराब आ रहा है। पारे वालों ने यह भी कहा की उन्हें पानी की बहुत समस्या हो रही हैं उन्हें दूसरे पारे से पानी लाना पड़ रहा है। समिति ने गांव के सरपंच को इस बात की सूचना दी। सरपंच के द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की गयी। फिर से गांव में समिति की बैठक की गयी तो उसमें यह तय किया गया की एक बार फिर से सरपंच को आवेदन देंगे अगर वे कुछ नहीं करेंगे तो हम फिर कलेक्टर को आवेदन देंगे। समिति के सभी सदस्य उसी समय 3 किलोमीटर चलकर पंचायत भवन गए परन्तु सरपंच वहां नहीं मिले फिर वे लोग सरपंच के घर गए और घर के बाहर बैठ गए। सरपंच को पारा के लोगों ने आवेदन दिया और बोला की अगर आप नहीं बनवाओगे तो हम लोग कलेक्टर को आवेदन देंगे। सरपंच ने सभी से तीन दिन का समय मांगा और तीन दिन के बाद हैंडपंप बनवा दिया गया और उसके आस पास पूरा सीमेंटेड भी करवा दिया।

ग्राम-मुड़धोवा, ग्राम पंचायत-केलुआ, विकासखंड-मनेन्द्रगढ़, जिला-कोरिया

इस गांव में रहने वाले लोग पहले नदी का पानी पीते थे। गांव में जब पानी जांच किया जा रहा था तो गांव वालों ने बोला की हम लोग नदी का पानी पीते हैं इसलिए नदी का पानी जांच करना चाहिए। मितानिन ने नदी का पानी जांच कर उन्हें समझाया की नदी का पानी गन्दा है और जब गांव में हैंडपंप लगा है तो आप लोगों को इसी का पानी पीना चाहिए। गांव वाले बोले की हमें हैंडपंप का पानी लोहा–लोहा लगता है इसलिए हम नहीं पिएंगे। मितानिन ने उन्हें समझया की आप लोग हैंडपंप का पानी घड़े में भर कर रख लीजिये और 2–3 घंटे के बाद पीजिए अच्छा लगेगा। और अगर नदी का पानी पिएंगे तो रोज छानकर और उबालकर ठंडा कर पीना पड़ेगा। गांव वालों को नदी के पानी को पीने योग्य बनाने के लिए बहुत कुछ करना पड़ेगा यह समझ में आ गया। उस दिन के बाद से गांव वाले रात में हैंडपंप से घड़े में पानी भर लेते हैं और अब उसी को पी रहे हैं।

ग्राम-राजासेवैया, विकासखंड-पिथौरा, जिला-महासमुंद

गांव के टप्पासेवैया पारा में हैंडपंप का पानी लाल निकल रहा था और लोग उसी पानी को पी रहे थे। गांव में ग्राम स्वास्थ्य समिति की बैठक की गयी और बैठक के बाद समिति के सदस्यों ने H2S किट की सहायता से पारा के लोगों के सामने उस हैंडपंप के पानी की जांच की। जांच के बाद समिति के सदस्यों ने पारा के लोगों को दिखाया की यह पानी पीने के लायक नहीं है, इस पानी को पीने से दस्त, पीलिया और टाईफाईड जैसी बीमारी हो सकती है। पारा वालों ने कहा की फिर हम कहा का पानी पिएंगे। समिति के सदस्यों ने गांव के सरपंच से उसी समय हैंडपंप में गन्दा पानी आने की जानकारी दी और पारा वालों के लिए साफ पीने के पानी की व्यवस्था करने के लिए कहा। सरपंच के द्वारा उसी समय गांव के एक किसान की बाड़ी से पाईप से पारे तक पानी पहुंचाने की व्यवस्था की गयी।

दस्त अभियान

गहन डायरिया पखवाड़ा की तैयारी पर कार्यकर्ताओं ने दिया जोर

जानकारी... डायरिया के बारे में जानकारी लेती महिलाएं।

बोरगांव @ पत्रिका . विकासखंड फरसगांव के अंतर्गत स्वास्थ्य विभाग के सभी सेक्टरों में स्वास्थ्य विभाग एवं मितानिन कार्यक्रम के संयुक्त तत्वाधान में गहन डायरिया पखवाड़ा के लिए तैयारी की जा रही है।

इसी तारतम्य में 25 मई को विकासखंड फरसगांव के सभी सेक्टरों में सुपरवाइजरों के द्वारा एएनएम, आरएचओ, मितानिन प्रशिक्षक एवं मितानिन को प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण के दौरान दस्त से बचाव, दस्त में ईलाज, ओआरएस जिंक जीवन रक्षक घोल बनाने की विधि को प्रशिक्षण में शामिल किया गया। इस पखवाड़ा में 0 से 5 साल तक के सभी बच्चों के परिवार के घर-घर जाकर ओआरएस जीवन रक्षक घोल से उपचार के बारे में बताया जाएगा। यह पखवाड़ा 9 जून के बीच चलेगा सेक्टर सुपरवाइजरों के माध्यम से देवगांव (कोन गुड़), बड़ेडोंगर, फरसगांव एवं लंजोड़ा में प्रशिक्षण दिया गया।

डायरिया नियंत्रण पखवाड़ा को लेकर मितानिनों को दी ट्रेनिंग, कल से सर्वे

भास्कर न्यूज | देवरीबंगला

ब्लॉक कार्यक्रम अधिकारी दिनेश कुमार ने मितानिन कार्यक्रम के कार्यकर्ताओं की बैठक लेकर डायरिया नियंत्रण पखवाड़े की जानकारी दी। जिसमें मितानिन को गांव के पांच वर्ष तक के बच्चों का सर्वे कर दस्त के मरीजों को स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाने कहा।

बैठक में ब्लॉक [illegible] स्वस्थ पंचायत समन्वयक तथा मितानिन प्रशिक्षक शामिल हुए। खंड चिकित्सा अधिकारी के द्वारा ओआरएस [illegible] टेबलेट उपलब्ध कराया गया। मितानिन प्रशिक्षक संकुल केंद्र स्तर पर मितानिनों को डायरिया पखवाड़ा के लिए ट्रेनिंग दे रहे है। सुरेगांव संकुल में प्रशिक्षक केशव शर्मा ने 27 मितानिनों को रविवार को प्रशिक्षण दिया।

उन्होंने बताया कि मितानिन [illegible] मई से 9 जून तक घर-घर जाकर दस्त के मरीज का चिन्हांकन कर ओआरएस पैकेट बांटेगी। साथ ही गंभीर मरीजों को स्वास्थ्य केंद्र रेफर करेगी। ब्लाक की 547 मितानिन डायरिया नियंत्रण के लिए पखवाड़े के लिए सर्वे शुरू कर रही है। [illegible] बड़गांव, खामतराई, [illegible], मंगचुवा, अछोली संकुल केंद्र के प्रशिक्षक मितानिनों को ट्रेनिंग विस्तृत रूप से दी गई।

देवरीबंगला. सुरेगांव में मितानिनों को डायरिया नियंत्रण की ट्रेनिंग देते हुए।

दस्त का इलाज झाड़-फूंक नहीं (ग्राम-कारीडोंगरी, विकासखंड-लोरमी, जिला-मुंगेली)

गांव के स्कूल पारा की मितानिन शीतला अपने पारा में परिवार भ्रमण के लिए निकली तो उसने देखा की पारा में रहने वाले गणेश की तबियत ठीक नहीं है। मितानिन ने गणेश के घर वालो से पूछा तो पता चला की उसे पिछले एक दिन से उल्टियां और दस्त हो रहा था और घर वाले उसका इलाज झाड़–फूंक कर करवा रहे हैं। मितानिन ने गणेश को देखा तो पाया की उसके शरीर में पानी की बहुत कमी हो गयी है और वह बहुत गंभीर रूप से कमजोर हो गया है। मितानिन ने तुरंत उसे ओ.आर.एस. का घोल बनाकर पिलाया और घर वालों को झाड़–फूंक बंद करवाने के लिए कहा। 108 गाड़ी नहीं मिली तो मितानिन ने निजी गाड़ी की और गणेश को तुरंत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर गई। सी.एच.सी. में डॉक्टर ने गणेश की गंभीर हालत को देखते हुए उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया। गणेश को बिलासपुर जिला अस्पताल लाया गया जहां उसे तुरंत भर्ती किया गया। गणेश को दो दिन भर्ती रखकर इलाज किया गया तब उसकी तबियत में सुधार आया। गणेश के घर वालों ने मितानिन का धन्यवाद दिया और कहा की अगर वह सही समय पर गणेश को अस्पताल नहीं लायी होती तो शायद उसकी जान भी जा सकती थी।

➡ शीतला–मितानिन

दस्त जानलेवा भी हो सकता है (ग्राम-चिखलामटिया, विकासखंड-छुरिया, जिला-राजनांदगांव)

गांव के एक परिवार में 8 सदस्य है। इस परिवार के एक 3 साल के बच्चे को दस्त हो रहा था। पारा की मितानिन जब इनके घर परिवार भ्रमण के लिए गयी तो उसने देखा की बच्चा एकदम सुस्त हो गया है। मितानिन ने बच्चे की मां से पूछा तो मां ने बताया कि मैं डॉक्टर से दवा लाई हूं और उसी को पिला रही हूं। मितानिन ने मां को समझाया की दस्त होते ही सबसे पहले हमें नमक शक्कर का घोल पिलाना चाहिए। मितानिन ने पहले मां का और स्वयं का हाथ साबुन से धोया और फिर एक साफ गिलास में नमक शक्कर का घोल बनाकर दिखाया और बच्चे को धीरे–धीरे पिलाने के लिए बोला। मितानिन ने मां को समझाया की बच्चे के शरीर में पानी की कमी न हो इसके लिए नमक शक्कर का घोल पिलाते रहना। बच्चे की मां ने मितानिन के बताए अनुसार बच्चे को नमक शक्कर का घोल बनाकर पिलाया। थोड़े देर के लिए बच्चे का दस्त ठीक हो गया था परन्तु थोड़ी देर बाद फिर से बच्चे को दस्त चालू हो गया। बच्चे को दस्त में आराम नहीं मिल रहा था और बच्चा बहुत कमजोर हो गया था तो मितानिन बच्चे को दूसरे दिन डोंगरगांव अस्पताल लेकर गयी। बच्चे को तीन दिन अस्पताल में भर्ती रखकर इलाज किया गया और जब बच्चा पूरी तरह ठीक हो गया तो फिर बच्चे की अस्पताल से छुट्टी की गई।

➡ अहिल्या बाई–मितानिन

दस्त पीड़ित विमला को अस्पताल में इलाज से मिला आराम
(ग्राम-परसदा (सोंठ), विकासखंड-अभनपुर, जिला-रायपुर)

गांव की विमला को एक दिन शाम को 6 बजे से दस्त शुरू हुआ तो उसके पति पारा की मितानिन धनेश्वरी से जाकर मिला और धनेश्वरी के बारे में बताया। मितानिन ने विमला के पति को ओ.आर.एस. का पैकेट दिया और कहा की इसे पिलाने के साथ–साथ खाना भी खिलाते रहना। रात को 9 बजे विमला का पति फिर से मितानिन के पास आया और उसे अपने साथ चलने के लिए कहने लगा। मितानिन जब विमला के घर गयी तो देखा की विमला एकदम सुस्त पड़ी हुयी है। मितानिन ने विमला से पूछा की कितने बार दस्त हुआ है तो विमला ने बताया की 10 से 11 बार। मितानिन ने विमला के पति से विमला को अस्पताल ले जाने के लिए कहा। विमला के पति ने तुरंत निजी गाड़ी की और उसे नयापारा के सरकारी अस्पताल ले गया। विमला को ग्लूकोस चढ़ाया गया तब विमला को थोड़ा आराम मिला। 2 दिन बाद विमला की अस्पताल से छुट्टी की गयी।

➡ धनेश्वरी–मितानिन

मातृत्व वंदना योजना

महिला एवं बाल विकास विभाग के द्वारा चलाई जा रही प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना का उद्देश्य है गर्भ से कुपोषण को समाप्त करना। एक कमजोर मां एक कमजोर बच्चे को जन्म देती है जिससे दोनों की जान को खतरा होता है। इस योजना में गर्भवती व धात्री माताओं को पहले जीवित बच्चे के लिए 3 किश्तों में 5000 रूपये दिए जाते हैं। पहली किश्त के 1000 रूपये गर्भ का पंजीयन कराने पर, दूसरी किश्त के 2000 रूपये गर्भावस्था के 6 माह पूरे होने व प्रसव पूर्व कम-से-कम एक जांच होने तथा आखिरी किश्त के 2000 रूपये प्रसव के बाद नवाजत के प्रथम चक्र के टीकाकरण के बाद दिया जाना तय किया गया है।

ग्रामीण स्तर पर प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के संबंध में हितग्राहियों को निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है -

- प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के सभी हितग्राहियों को समय पर कोई भी किश्त नहीं मिल रही है। बहुत से हितग्राही तो ऐसे हैं जिनके बच्चे का जन्म हुए 1 वर्ष से अधिक हो गया है और उन्हें एक भी किश्त नहीं मिली है।
- आवेदन प्रपत्र भरने में मदद के नाम पर कई विकासखंडों में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा राशि 10-200 रू. तक लिया जा रहा है।
- आवेदन प्रपत्र आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के पास उपलब्ध नहीं है। विकासखंड के फोटोकॉपी सेंटर से खरीदना पड़ रहा है।
- योजना 01/01/2017 से लागू है परन्तु कुछ विकासखंडों में राज्य शासन द्वारा जारी पत्र/दिशानिर्देश दिनांक 12/12/2017 के बाद की गर्भवती को ही पात्र माना जा रहा है।
- कुछ विकासखंडों में दिनांक 12/12/2017 की स्थिति में जिनका प्रसव हो चुका था उन्हें बारी-बारी में आवेदन प्रपत्र भरने के लिए बोला जा रहा है।
- आवेदन जमा करने के कितने दिनों की अन्दर भुगतान किया जाना है उस पर सरकार के द्वारा दिए गए दिशानिर्देश में कोई स्पष्टता नहीं है।
- कोई भी कारण से यदि फार्म अस्वीकार (रिजेक्ट) हो जाता है तो उसक जानकारी हितग्राही को नहीं दी जा रही है।
- फार्म इंट्री के नाम पर 50-500 रूपये हितग्राहियों से लिए जा रहे हैं।

मातृत्व वंदना के नाम पर ऐंठते है रकम और फॉर्म के ऊपर लेते है मनमानी फीस

इस्पात टाइम्स/रायगढ़।

विकासखण्ड पुसौर के आंगनबाड़ी केन्द्रों में प्रधानमंत्री की योजनाओं में से एक योजना मातृत्व वंदना जो प्रथम बच्चे के जन्म पर माताओ को 5000 की सहायता राशि दी जाती है जो शासन से अप्राप्त है कहा गया था कि बच्चे के जन्म के बाद माता को यह राशि दी जाएगी लेकिन दो दो वर्ष हो जाने के बाद भी राशि अप्राप्त है इस विकासखण्ड में कुल 1643 गर्भवती महिलाएँ है जिनमे से 1368 गर्भवती महिलाओं का फॉर्म भरा गया है बाकी 275 गर्भवती महिलाओं का फॉर्म नही भरा गया है जिसके फॉर्म निःशुल्क आंगनबाड़ी में भरे जाते है लेकिन कार्यकर्ता इनसे फॉर्म भरने के दो सौ तो किसी से चार सौ तक वसूलते है अगर हितग्राही पैसे देने से इनकार करते है तो उन्हें बाहर कम्प्यूटर सेंटर में जाकर ज्यादा पैसे देकर फॉर्म भरने को कह दिया जाता है हितग्राहियो और मितानिनों के द्वारा इसकी

शिकायत परियोजना अधिकारी से भी की जा चुकी है अधिकारी कहते है कि पैसे देने की कोई दरकार नही किंतु उन कार्यकर्ताओ पर कोई कार्यवाही नही होती इनमे कुछ सुपरवाइजर के और कार्यकर्ताओं के नाम भी आ रहे है। आश्चर्यजनक जनक बात यह है कि अगर आंगनबाड़ी जैसे से छोटे जगह की यह स्थिति है तो बड़े ऑफिसों का क्या हाल होगा आज हितग्राहियो और मितानिनों के द्वारा जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौप गया है

प्रधान मत्री मातृत्व वंदना योजना संबंधी केस स्टडी निम्न है -

समिति के प्रयास से हितग्राहियों को मिला मातृ वंदना योजना का लाभ (विकासखंड-पाटन, जिला-दुर्ग)

पाटन विकासखंड के अंतर्गत 145 में सभी पंचायतों में हितग्राहियों का मातृ वंदना योजना का फार्म आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के द्वारा भरा गया था। फार्म तो भर लिया गया परन्तु किसी भी हितग्राही को इसका लाभ नहीं मिला था। विकासखंड के सभी पंचायतो में ग्राम स्वास्थ्य समिति की बैठक में मातृ वंदना योजना पर चर्चा किया गया। समिति में मातृ वंदना योजना का लाभ लेने के लिए कार्ययोजना बनायीं गयी जिसमें आंगनबाड़ी कार्यकर्ता से स्पष्टीकरण जानकार हितग्राही के द्वारा परियोजना अधिकारी को आवेदन दिया गया। परियोजना अधिकारी को आवेदन मिलते ही सुपरवाईजर को निर्देशित किया गया की जिन हितग्राहियों का मातृ वंदना योजना की किश्त नहीं मिली है उनके आवेदनों का निराकरण किया जाए। इस प्रक्रिया के बाद से विकासखंड में मातृ वंदना योजना के हितग्राहियों को उनका लाभ मिलाना शुरू हो गया है।

➡ तुलसी निषाद

मातृ वंदना योजना के फार्म को भरने के लिए ली जा रही अवैध राशि की समस्या का सम्मलेन में हुआ समाधान (ग्राम-कौंदकेरा, विकासखंड-फिंगेश्वर, जिला-गरियाबंद)

विकासखंड के बहुत से गांव में मातृत्व वंदना योजना के तीन किश्तों का फार्म भरने के लिए पार्टी किश्त 150 रूपए की हिसाब से कुल 450 रूपए महिला एवं बाल विकास के कर्मचारियों के द्वारा लिया जा रहा था। विकासखंड में ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठक में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता से फार्म का पैसा क्यों लिया जा रहा है पूछा गया तो उसने बताया की सुपरवाईजर मैडम ने बोला है कि आनलाईन फार्म भरा जा रहा है इसलिए पैसा देना पड़ेगा। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को स्वस्थ पंचायत समन्वयक के द्वारा समझाया गया की मातृ वंदना योजना का फार्म मुफ्त में भरे जाने का प्रावधान है परन्तु आंगनबाड़ी कार्यकर्ता नहीं मानी। समिति के द्वारा हितग्राहियों से जिनसे पैसे लिय गए हैं उनसे आवेदन तैयार करवाए गए और स्वस्थ पंचायत सम्मलेन में विधायक महोदय को दिया गया। विधायक महोदय के द्वारा उसी समय परियोजना अधिकारी को इस भ्रष्टाचार को बंद करने के लिए कहा। उसके बाद से मातृ वंदना योजना का फार्म भरने का पैसा नहीं लिया जा रहा है।